International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 9, pp: 710-711 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

नागार्जुन की मैथिली कविताओं में यथार्थ – बोध

डॉ० राम बिहारी चौधरी

शोधप्रज्ञ ति० माँ ० भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर,बिहार,भारत

Date of Submission: 15-11-2020 Date of Acceptance: 30-11-2020

सारांश –1911से **1998**तक की जीवन-यात्रा, फिर साठ वर्षों से अधिक की काव्य-यात्रा करने वाले वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'उर्फ़ बाबा नागार्जुन के विराट काव्य संसार पर विचार करना सरल कार्य नहीं है| इसीलिए यहाँ सिर्फ मैथिली कविताओं को ही आलेख का विषय बनाया गया है| **मैथिली साहित्य में पहले प्रगतिवादी कवि के रूप में नागार्जुन समादृत हैं**| प्रगतिवाद सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक यथार्थ पर बल देता है, इसीलिए इससे जुड़े रचनाकार इस प्रकार के यथार्थ को अपने रचना-संसार में प्रश्रय देने लगे| कवि नागार्जुन की यथार्थवादी रचनाएँ अभिव्यक्ति की वक्रता के कारण पाठक के मर्मस्थल पर अचूक प्रभाव अंकित कर देती है| कवि की ये कविताएँ **'पंत'** की कविताओं की तरह कल्पनालोक की उड़ान नहीं भरती वरन् निराला की कविता **'वह तोड़ती पत्थर'** की तरह अनुभूति को प्रकट करती है|

प्रस्तावना -

1911से **1998**तक की जीवन-यात्रा, फिर साठ वर्षों से अधिक की काव्य-यात्रा करने करने वाले **वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'उर्फ़ बाबा नागार्जुन** के विराट काव्य संसार पर विचार करना सरल कार्य नहीं है| इसीलिए यहाँ सिर्फ मैथिली कविताओं को ही आलेख का विषय बनाया गया है|

सर्वविदित है मैथिली कविताओं में पहले प्रगतिवादी कवि के रूप में **'यात्री'** समादृत हैं| चूंकि प्रगतिवाद कल्पना के बदले सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक यथार्थ पर बल देता था, इसीलिए इससे जुड़े रचनाकार इस प्रकार के यथार्थ को अपने रचना-संसार में प्रश्रय देने लगे, या यूँ कहें की यथार्थवादी जीवन जीवन दृष्टि यात्री जैसे रचनाकारों की रचनाशीलता एवं संचालित करने वाली मुख्य शक्ति बन गई|

जीवन जैसा है ,वैसा अभिव्यक्त करना यथार्थवाद की प्रतिबद्धता है| सामाजिक स्तर पर जीवन का जैसा रूप है , उसका यथातथ्य वर्णन करना सामाजिक यथार्थ का चित्रण करना है| साहित्य में **यथार्थ (Realism)** एक दृष्टिकोण का नाम है| वास्तविकता अर्थात **सत्य (Truth)** सम्पूर्ण जीवन है| इसमें सभी बाहय क्रिया-कलाप के साथ आतंरिक उथल-पुथल, संस्कार, जीवन-धारा, रुचि-अरूचि सभी आ जाते हैं | कवि नागार्जुन की कविताएँ अभिव्यक्ति की वक्रता के कारण मनोरंजन के साथ-साथ अनायास पाठक के मर्मस्थल पर अपना अचूक प्रभाव अंकित कर देती है| उनकी रचनाएँ समस्याओं को लक्ष्य बनाकर अपूर्व सुधार की अव्यक्त चेतना जगाती हैं| उनकी कविता समसामयिक जन-जीवन के चित्र ठोस कर्कश रूप में अभिव्यक्त करने में बेजोड़ हैं| इस सम्बन्ध में **डॉ० यशोदानाथ झा** ने **'मैथिली काव्य साहित्य में यात्री'**शीर्षक निबंध में लिखा है -**"हरवाह जेकाँ जोति-कोड़ि कैं आबाद कयनिहार यात्रीक काव्य में एहन प्रखर भाव क्षमता छैक ,जे समसामयिक समस्त काव्य संभारक बीच प्रखर अर्थबोध धरती ओ जनताक प्रति अनन्य प्रेम ,निष्कम्प आस्था एवं विश्वास सँ मंडित अछि|"** [1]

जनता को वाणी देनेवाले कवि की कुछ कविताओं में निम्नवर्गीय संघर्ष-चेतना प्रकट हुई है| महाजनी चट्टान से ठोकर खाते,भयंकर संघर्ष की गिरि से टकराते सर्वहारा को समर्थन देते नागार्जुन की कविता साम्राज्यवादी संस्कृति को जैसे चुनौती दे रही है|

नागार्जुन ने मैथिली में अनेक यथार्थवादी कविताओं की रचना की|कुछ रचनाएँ **'चित्रा'** में संकलित हैं|यथा-**'बूढ़ वर' 'विलाप'** और **'द्वन्द'**तो कुछ **'पत्रहीन नग्न गाछ'** में, यथा-**'बांसक छाहरि', 'सुखैल टटैल एक टा बेंङ', 'हे निरभ्र आकाश', 'पसेनाक गुण-धर्म', 'परल छी छगुनता में', ' कंकाले कंकाल', ' नब नचारी', ' पाकल अछि ई कटहर'**, और **'सिंह वाहिनी दश भुजा चंडी'**|कुछ अन्य असंकलित रचनाएँ भी यथार्थवादी स्वरोन्मुख हैं|यथा-**'हम छी छुब्ध.....','आहिरे कर्म', 'बुढ़ारी में दुनूगोटे तथैव च'** |

कवि के यथार्थ वर्णन में सर्वत्र एक व्यंग्य है,जो समाज में व्याप्त विद्रूपता,कुरीति आदि की ओर उँगली उठाते हुए सुधार की दिशा में बढ़ती है| सामाजिक यथार्थ से अवगत कराते हुए कवि ने पुरुष-प्रधान परिवार में नारी की स्थिति को स्पष्ट करते हुए उसकी कारुणिक अभिव्यक्ति एक कान्या के मुँह से कराया है-

'जो रे राक्षस जो रे पुरुषक जाति,
तोरे मारलि हमरा सभ मरि रहल छी
किकिया रहल छी कुहरि रहल छी|' [2]

अर्थात् जो रे राक्षस पुरुष /तुम्हारी मारीहुई हम स्त्रियाँ मर रहीं हैं /मैं दुःख से कराह रही हूँ |कुहर रही हूँ|

इस कविता में कवि ने उस समय मिथिला में प्रचलित अनमेल विवाह जैसी रूढ़िगत परंपरा का अंत आवश्यक माना है साथ ही बहुपत्नीवाद तथा बेटी बेचने

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 9, pp: 710-711 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

जैसी कुकृत्य की रोक-थाम भी आवश्यक माना है| इस कविता का **रचना-स्थान कवि का निज ग्राम तरौनी (दरभंगा)** है और **रचना-काल सन् १९४१ ई.**|

'विलाप'[3]कविता का मुख्य स्वर बाल-विधवा की करुणा है|यह पुरुष-प्रधान समाज पर एक प्रश्न-चिह्न है| एक विवाहिता जब किशोरावस्था में ससुराल आती है,तभी उसके पति का देहांत हो जाता है|उसका मन उसी दिन से विलाप करने लगता है|उसे जितना विधवा होने का गम है, उससे कहीं अधिक उस गाँव के नामी-गिरामी पुरुष के हवस का शिकार होने का भय| इसलिए वह अपने जीवन की तुलना कुत्ता-बिल्ली से करती हुई कहती है-

'इहो जीवन कोनो जीवन थीक
एहि सँ कुकुड़-बिलाड़िए नीक'[4]

'बाँसक छाहरि'[5]कविता समाज में व्याप्त निज सुख पर व्यंग्य है|कवि के अनुसार सुख वही अच्छा जिसमें दूसरों को कोई कष्ट न उठाना पड़े| लेकिन,वर्तमान समाज में ऐसा देखा जा रहा है कि लोग दूसरों के कष्ट में सुख उठाने लगे हैं|यह तो दानवी प्रवृति है|

शोषक वर्ग के विरुद्ध आत्मदाह की आग में झुलसते सर्वहारा के स्वर में धूसर,तपे,तने,कुपित महाजनी-दर्प को चूर्ण-विचूर्ण करने के स्वर में कितना आक्रोश और दृढ़ता है वह यथार्थवादी कविता **'हे! निरभ्र आकाश'**[6]में वर्णित है-

'हमरा सब ओहिना नहिं नष्ट होयब
तोरे नामें करैत जायब आत्मदाह
एकक पछाति दोसर
.....
एहि क्रमें हजारक हजार'

इस आत्मदाह का कारण स्पष्ट करते हुए कवि कहता है-

'हमरा सभक चिताधूम क देतहु तोरा अकच्छ|[7]

काव्यांश से स्पष्ट है कि कवि की वाणी युग के घटाटोप अंधकार में घिरी मानवता की व्याख्या को नया आधार प्रदान करती है|इसलिए कवि की काव्य संवेदना के केंद्र में सुख-दुःख के लिए एक सामाजिक मनुष्य की मूर्ति प्रतिष्ठित है|

'पसेनाक गुण-धर्म'[8]शीर्षक कविता में कवि का यथार्थवादी स्वर और कारुणिक हो गया है|कवि का हृदय रिक्सवाले के पीठ की फटी,तार-तार बनियान को देखकर विदीर्ण हो उठता है|कवि की मार्मिक अभिव्यक्ति इन काव्य-पक्तियों में दृष्टिगत है -

'रिक्शाबलाक पीठ दिशुका फाटल तार-तार बनियाइन
पसेनाक अधिकांश गुण-धर्म कें
कए रहल अछि प्रामाणित'[9]

इसी कड़ी की दूसरी कविता है **'पड़ल छी छगुंता में'**[10]अर्थात् आश्चर्य में पड़ा हूँ|अब आपके मन में प्रश्न उठना लाजिमी है कि जनकवि नागार्जुन क्यों आश्चर्य में पड़ गए ? तो चलिए मैं आपका शंका समाधान कर देता हूँ| सरकारी गोदाम में काम करनेवाले एक मज़दूर की कारुणिक स्थिति को देखकर कवि आश्चर्य में पड़ गए|वह जब जवानी में काम करने आया था तो नित्य तीन-तीन सौ आनाज का बोरा ढोता था| लेकिन्,कुछ ही दिनों के बाद वह एक सौ एक सौ-पच्चीस बोरा ही ढो पाता है|इसी बीच दस बार पानी पीता है| इसीलिए वह (मजदूर) सोच में पड़ा हुआ कहता है –

'चाटि गेल कोन घून
कोंढ़ ओ करेज के'[10]

गोदाम में बोड़ा ढोने वाले मजदूर का यह एक कारुणिक शब्द- चित्र है|

'नव नचारी '[11]कविता में कवि को यथार्थता को प्रकट करने मे परंपरा से संघर्ष करना पड़ता है और यह संघर्ष कवि को नास्तिक बना देता है| कवि कहते हैं –

' नहीं नब्ते तोरा खातिर किन्नहु हमर माथ|
पाथर भेलाह तो सरिपहुँ बाबा वैदनाथ|[12]

अर्थात तुम्हारे सामने मेरा सिर नहीं झुकेगा क्योंकि बाबा वैद्यनाथ तुम सचमुच पत्थर के हो गये हो|

निष्कर्ष–

[1]. **इस प्रकार नागार्जुन की यथार्थवादी मैथिली कविताएँ कल्पनालोक से इतर यथार्थ के धरातल पर अवतरित है | ये कविताएँ लोगों के मनोरंजन के लिए नहीं है ;बल्कि ये जीवन की सच्चाई से रू-ब-रू करा -ती हैं और जीवन के आगे मार्ग प्रशस्त करती है| कवि की ये कविताएँ 'पंत' की कविताओं की तरह कल्पनालोक की उड़ान नहीं भरती वरन् निराला की कविता ' वह तोड़ती पत्थर' की तरह सघन अनुभूति को प्रकट करती है|**

[2]. **निस्संदेह,नागार्जुन की कविताएँ विषय-वस्तु एवं शिल्प-विधान दोनों ही दृष्टियों से यथार्थवाद के विकास में एक मील का पत्थर है|**

संदर्भ -

1.यात्री काव्य निवेचन; डॉ० यशोदानंद झा, मैथिली अकादमी , पटना पृष्ट-73
2. नागार्जुन रचनावली : 3/ राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली ,पृष्ट-48
3. वही
4. वही
5. वही पृष्ट-136
6. वही पृष्ट-140
7. वही
8. वही
9. वही
10. वही
11. वही पृष्ट-146
12. वही